Hindi
Explore–Journal of Research
Peer Reviewed Journal
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
https://www.patnawomenscollege.in/journal

हिन्दी कथाकारों की मानवीय संवेदना

• वसुधा • शिखा मुस्कान • पुनीता कुमारी
• मंजुला सुशीला

Received : December, 2021
Accepted : January, 2022
Corresponding Author : Manjula Sushila

Abstract: *कहानियाँ न सिर्फ साहित्य का बल्कि मानव जीवन का अभिन्न अंग है। प्रारम्भिक काल से ही कहानियों ने मानव–मन को लुभाने, मनोरंजन देने के साथ–साथ जीने की कला भी सिखाई है। जब ये बोली और सुनी जाती थी तब भी उतनी ही महत्वपूर्ण थी, जितनी आज लिखी और पढ़ी जाने पर। आज के कथाकारों ने अपनी लेखनी द्वारा मानवीय भावनाओं को समेटकर अपनी संवेदना को प्रकट करने का प्रयास किया है। आज हमारा समाज कई प्रकार के नकारात्मक आचरण, व्यवहार, अनैतिक भावना एवं नियमों के दौर से गुजर रहा है। ऐसे में समाज वर्ग–विभेद के चक्र में फँस गया है, परिणामतः समाज में कुछ लोगों के प्रति नकारात्मक व्यवहार कर उनकी भावनाओं और आत्मा को ठेस पहुँचाया जा रहा है। ऐसे उपेक्षित वर्ग की श्रेणी में हम स्त्री, वृद्ध, आदिवासी, दलित आदि की चर्चा करते हैं। हिन्दी साहित्य के कई लेखकों ने अपनी कहानियों द्वारा इन उपेक्षितों के प्रति ना सिर्फ अपनी सहानुभूति प्रकट की है, बल्कि उन्होनें इनकी स्थिति में सुधार के सुझाव भी दिये हैं। इस दृष्टिकोण से इस शोधपत्र द्वारा कुछ चुनिंदा कथाकारों की कहानियों के माध्यम से स्त्री, वृद्ध, दलित, आदिवासी एवं बालकों की स्थिति पर विचार प्रकट किया गया है। प्रेमचन्द रचित 'बूढ़ी काकी', भीष्म साहनी की 'चीफ की दावत', उषा प्रियंवदा की 'वापसी' कहानी वृद्धों के प्रति संवेदना को दर्शाती है। वहीं स्त्री विमर्श के तहत अमरकांत ने 'दोपहर का भोजन', जैनेन्द्र की 'पत्नी', अज्ञेय की 'गैंग्रीन' जैसी कहानियाँ समाज में स्त्रियों की मार्मिक स्थिति को दर्शाती हैं। दलित वर्ग के प्रति देखें तो कथाकारों में सर्वप्रथम प्रेमचंद (सद्गति), ओमप्रकाश वाल्मीकि (सलाम), और नीरा परमार (वैतरणी) आदिकी कहानियाँ न सिर्फ दलितों के शोषित–पीड़ित जीवन को दर्शाती हैं, बल्कि उनके प्रति समाज के नकारात्मक व्यवहार का खुलासा भी करती हैं। ऐसे ही बालकों के प्रति दुर्व्यवहार और नकारात्मक मानसिकता को जैनेन्द्र (पाजेब), प्रेमचंद (ईदगाह), मार्कण्डेय (जूता) आदि ने अपनी कहानियों के माध्यम से प्रकट किया है। इन विषयों के अलावा भी कई ऐसे विषय हैं जिनपर हमने अपने शोधपत्र में चर्चा की है, जिसके माध्यमसे हिन्दी कथाकारों एवं अन्य भाषा के कथाकारों की मानवीय संवेदना प्रदर्शित होती है। इस विषय के चयन का उद्देश्य कथाकारों की संवेदना को पहचान कर, समाज को उपेक्षित वर्ग के प्रति अपनी सोच को बदलने के लिए प्रेरित करना है।*

संकेत–शब्द ***(Keywords) :*** *मानवीय भावनाएँ, नकारात्मक, अनैतिक, वर्ग–विभेद, सहानुभूति, उपेक्षित।*

वसुधा
B.A. III year, Hindi (Hons.), Session: 2019-2022,
Patna Women's College (Autonomous),
Patna University, Patna, Bihar, India

शिखा मुस्कान
B.A. III year, Hindi (Hons.), Session: 2019-2022,
Patna Women's College (Autonomous),
Patna University, Patna, Bihar, India

पुनीता कुमारी
B.A. III year, Hindi (Hons.), Session: 2019-2022,
Patna Women's College (Autonomous),
Patna University, Patna, Bihar, India

मंजुला सुशीला
अध्यक्षा, हिन्दी विभाग
पटना वीमेन्स कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय,
बेली रोड, पटना–800 001, बिहार, भारत
E-mail : manjula.hindi@patnawomenscollege.in

भूमिका:

हमने अपने इस शोध–कार्य में कहानियों के माध्यम से कथाकारों की मानवीय संवेदना को दर्शाने का प्रयास किया है। मानवीय संवेदना प्रारंभ से ही हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि रही है। कथाकारों का साहित्य सृजन के पीछे यही उद्देश्य होता है कि उनकी कृतियों को पढ़ा जाए और लोगों के भीतर चेतना जागृत हो। वर्तमान परिवेश में मनुष्य के अंदर मनुष्यता खत्म–सी हो गई है और उनके भीतर की पशुता ज्यादा प्रभावशाली हो रही है। इसी पशुता को खत्म करने और लोगों के भीतर लोक कल्याण की भावना को जागृत करने के उद्देश्य से हमने अपने शोध–कार्य में मानवीय संवेदना जैसे विषय का चयन किया।

मानवीय संवेदना एक सार्वभौमिक मनोभाव है जिसका उद्देश्य केवल मानव समाज का नहीं अपितु समस्त जीवों का हित है। हिन्दी कथाकारों ने अपने लेखन में इन्हीं मानवीय संवेदनाओं को दर्शाया है। रचनाकारों ने मानव–मूल्यों को समाज में स्थापित करने का प्रयास किया है ताकि लोग जागरूक हो सकें। वर्तमान युग सामाजिक विडंबनाओं और त्रुटियों से परिपूर्ण है।

डॉ. सुरेश सिन्हा के अनुसार – "साहित्य में संवेदना से अभिप्राय है, वह अनुभूति–प्रवणता जो सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्रभावों को ग्रहण करने की क्षमता से पूरित होती है। इसका अर्थ यह भी होता है कि कोई साहित्य किन भावनाओं की प्रतीति हमें करा सकने में सक्षम होता है। भावनाओं के ये स्तर विविध होते हैं। यह आधुनिक बोध भी हो सकता है या मानव–अस्तित्व की बुनियादी विशेषताएं भी। वह व्यक्ति–स्वातंत्र्य की भावना भी हो सकती है या यथार्थ के नए तत्वों की अन्विति भी। संवेदना का धरातल चाहे जो भी हो, अभिव्यक्ति उसे साहित्य के माध्यम से ही मिलती है। नई अनुभूति, नई भाषिक–अर्थवत्ता, अनुभवों का नया संयोजन तथा मानव–संबंधों के परिवर्तन की सूक्ष्म परख आदि से ही साहित्य की संवेदना स्पष्ट होती है। भाषा, भाव और प्रेरणा – तीनों ही प्रत्येक काल में साहित्य की संवेदना को नई अर्थवत्ता प्रदान करते हैं। (यादव, डॉ उषा–11)

आजादी मिले कई वर्ष हो चुके हैं। हमें संविधान में बराबरी का अधिकार प्राप्त है परंतु वर्तमान युग में समाज के दबे–कुचले वर्ग के प्रति उपेक्षित सोच उन्हें उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चलने नहीं देती। ये मिले हुए संवैधानिक अधिकार सिर्फ कागजी होकर रह गए हैं। स्त्रियों, बुजुर्गों, दलितों, आदिवासियों, मजदूरों, कृषकों और किन्नरों के प्रति समाज की रूढ़िवादी सोच उनके विकास के मार्ग में बाधा उत्पन्न करती है। स्त्रियों का शोषण पितृसत्तात्मक समाज द्वारा वर्षों से शैक्षणिक, मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आदि रूपों से होता आ रहा है। उनके हौसले के उड़ान को रोकने की कोशिश की जाती रही है, अतः उनके संघर्षों को दिखाना हमारा उद्देश्य है। हमारा समाज सिर्फ स्त्रियों के प्रति ही ऐसी कुंठित सोच नहीं रखता बल्कि दलितों, मजदूरों और कृषकों के प्रति भी उसकी ऐसी ही सोच है। खोखली जाति–व्यवस्था से पूर्ण समाज सिर्फ उच्च जातियों के विकास को अपना ध्येय मानता है और इसके कारण निम्न–जातियों का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता। आज जो विकासात्मक रूप से कमजोर हैं, वे और कमजोर होते चले जा रहे हैं और जो मजबूत हैं, वे मजबूत होते चले जा रहे हैं। हमारा समाज समाजवादी न होकर पूंजीवादी हो गया है और ये सामाजिक कमजोरियाँ इसी की देन हैं। इसी तरह आदिवासियों पर भी विचार करना आवश्यक है। वे देश के जन–समुदाय का अभिन्न अंग हैं परंतु आज भी देश के विकास की मुख्य धारा में नहीं जुड़ पाये हैं। किन्नर भी हमारे समाज का अंग हैं परंतु समाज द्वारा वे उपेक्षित हैं जिसके कारण वे स्वयं को इस समाज का अंग नहीं मानते। वृद्ध हमारे समाज के मार्गदर्शक हैं किन्तु आज समाज में इन्हीं मार्गदर्शकों के प्रति युवा पीढ़ी की उपेक्षित सोच उनकी वृद्धावस्था को और बोझिल बना रही है। युवा पीढ़ी उनके अनुभवों से सीखने की कोशिश नहीं करती बल्कि उल्टा उनके अनुभवों और सीखों को ढकोसला बताती है। इन सभी मुद्दों के अलावा बाल–मनोविज्ञान पर भी चर्चा करना आवश्यक जान पड़ता है। समाज में घटित हो रही घटनाओं का उनके नाजुक बाल–मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ता है। बच्चे हमारे समाज की नई पीढ़ी हैं, उनका सर्वांगीण विकास होना और उनके मनोभावों को समाज तक पहुँचाना हमारा उद्देश्य है। नस्लभेद की समस्या से उत्पन्न समस्याओं ने मानवीयता को ही क्षति पहुंचाई, जिसके कारण लोगों को नुकसान पहुंचा और अल्पसंख्यकों की स्थिति कारुणिक हो गई। वे नफरत और घृणा के शिकार हो गए। इन दबे–कुचले वर्गों के साथ किया जा रहा घृणित व्यवहार हमारी मानवीय संवेदनाओं को जागृत करता है, अतः हमारी कोशिश है कि हम इन लोगों के दर्द, पीड़ा, व्यथा और संत्रास को इस शोध–पत्र के माध्यम से समझने की कोशिश करें।

संवेदनाओं का क्षेत्र विस्तृत है किन्तु हमने स्त्री, दलित, वृद्ध और बाल मनोविज्ञान जैसे विषयों के प्रति ही लेखकों की मानवीय संवेदना को दर्शाने का प्रयास किया है।

उद्देश्यः

हमारे परियोजना कार्य का विषय है– "हिन्दी कथाकारों की मानवीय संवेदना"। कथाकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से जिन मानवीय संवेदना को दर्शाया है उसे हमने अपने परियोजना कार्य द्वारा समझने का प्रयास किया है।

सामान्य उद्देश्य– हिन्दी साहित्य जगत के हिन्दी कथाकारों की कहानियों में मानवीय संवेदना से पूर्ण भावनाओं को समझना।

विशिष्ट उद्देश्य – कुछ विशिष्ट कथाकारों की श्रेष्ठ कहानियों द्वारा अलग–अलग वर्गों के प्रति संवेदनापूर्ण भावों की पहचान और समाज तथा पाठक वर्ग में बदलाव की आकांक्षा।

अध्ययन पद्धति – हमने अपने परियोजना कार्य के लिए शोध प्रविधि की द्वितीयक पद्धति का प्रयोग किया है। तथ्यों के संग्रह के लिए संबंधित पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, सामाजिक माध्यमों एवं इंटरनेट की मदद ली गयी है।

वृद्ध विमर्श की चर्चा करते हुए प्रेमचंद रचित 'बूढ़ी काकी', कहानी में बूढ़ी काकी की मार्मिक और कारुणिक स्थिति को दर्शाया गया है। आज की युवा पीढ़ी सिर्फ पैसों के पीछे भाग रही है और अपने संस्कारों तथा सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों को भूलती जा रही है।उनकी मानसिकता केवल पैसों पर जाकर टिक गई है जिसका

सबसे ज्यादा नुकसान वृद्धों को झेलना पड़ता है।पैसे मिल जाने के बाद रूपा और उसके पति द्वारा उसे पेट भर खाना भी नसीब नहीं होता। घर में आनंदोत्सव है, पूरे गाँव ने लजीज खाने का लुत्फ उठाया, परंतु घर की वृद्धा के पेट में अन्न का एक दाना भी नहीं गया। बूढ़ी काकी में इसीज्वलंत मुद्दे को दर्शाया गया है।इसी प्रकार प्रेमचंद की अन्य रचना 'पंच–परमेश्वर'में भी खाला को जुम्मन शेख द्वारा उसके हक से वंचित रखने की कोशिश की जाती है। इसी प्रकार उषा प्रियंवदा की 'वापसी' में भी वृद्धों की दयनीय स्थिति को दर्शाया गया है। सेवानिवृत्त होने पर गजाधर बाबू की घर वापसी उनके परिवारजनों को कुछ खास पसंद नहीं आती। उनका रवैया गजाधर बाबू के प्रति कठोर और उपेक्षापूर्ण हो जाता है। उनकी जीवन–संगिनी भी उनके मनोभाव को नहीं समझ पाती हैं, जिससे व्यथित होकर गजाधर बाबू पुनः नई नौकरी ढूंढ घर छोड़ कर चले जाते हैं। वृद्धावस्था उम्र का वह पड़ाव होता है जिसमें व्यक्ति को अपनों का साथ और स्नेह चाहिए होता है परंतु 'वापसी' कहानी में यह साथ और अपनापन नहीं दिखाई देता। यह सामाजिक विडंबना आधुनिक युग की देन है। इसी तरह भीष्म साहनी रचित 'खून का रिश्ता' कहानी में वृद्धों की मार्मिक और कारुणिक स्थिति का पता चलता है। प्राचीन समय से लेकर कुछ समय पूर्व तक खून का रिश्ता रिश्तों का मेरुदंड माना जाता था परंतु वर्तमान परिस्थिति कुछ अन्य तथ्य सामने लाती है। अब खून के रिश्तों में भी सम्मान और स्नेह शेष नहीं रहा। 'खून का रिश्ता' कहानी भी इसी स्थिति को दर्शाती हैं। मंगलसेन के भतीजे की शादी है परंतु सगाई में उन्हें नहीं ले जाने का फैसला लिया जाता है। कुछ समय उपरांत मंगलसेन के उतरे हूए चेहरे को देखकर उन्हें ले जाने का फैसला लिया जाता है। सगाई से लौटने के पश्चात ही घर के सम्माननीय व्यक्ति मंगल सेन के ऊपर चम्मच की चोरी का झूठा आरोप लगाया जाता है। उनके कपड़ों की तलाशी ली जाती है। चोरी की बात साबित नहीं होने के बाद भी उनसे माफी नहीं मांगी जाती। घर का नौकर भी यह देखकर दंग है कि घरवालों का मस्तिष्क और हृदय कितना मलिन है। उसके हृदय में विचार आता है कि जिस घर में वृद्धों की इज्जत नहीं वहाँ उसका क्या स्थान होगा। जिस प्रकार हम आधुनिकीकरण की ओर बढ़ रहे हैं और युवाओं की प्रशंसा जोरों–शोरों से हो रही है उसी प्रकार वृद्धों की स्थिति पर भी विमर्श करना अति आवश्यक जान पड़ता है।

ऐंगल्स के अनुसार– "मातृसत्ता में पितृसत्तात्मकता का अवतरण स्त्री जाति की सबसे बड़ी हार थी। सत्य तो यह है कि स्त्री के लिए ऐसा स्वर्ण युग वास्तव में एक मिथक के अलावा और कुछ नहीं। यह कहना कि स्त्री अन्या है, इस बात को सिद्ध करता है कि स्त्री और पुरुष में कोई पारस्परिक संबंध नहीं था। वह चाहे धरती थी,चाहे माता, देवी, किन्तु पुरुष की संगी मित्र कभी नहीं थी। ('मीनू'––7)।

स्त्री विमर्श की चर्चा करते हुए मनीषा कुलश्रेष्ठ रचित 'कठपुतलियाँ' कहानी में सगुनाकी दयनीय स्थिति को दर्शाया गया है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो स्त्री की स्थिति आज भी पूर्ववत बनी हुई है। आज की स्त्री अपने अधिकारों के प्रति सजग है परंतु ऐसी कई स्त्रियाँ अभी भी प्रताड़ना का शिकार होती रहती हैं।स्त्री भी कभी–कभी इस स्थिति की जिम्मेदार होती है जो सास, माँ, बहन आदि रूपों में एक स्त्री को प्रताड़ित करती है। सगुना के पढे–लिखे होने के बावजूद भी उसे अपने परिवार द्वारा प्रताड़ित किया गया। उसका कम उम्र में विवाह हुआ और गर्भावस्था में मुश्किल होने पर सास द्वारा लांछन लगाया गया। इसी प्रकार जैनेन्द्र रचित 'पत्नी' कहानी में सुनंदा द्वारा एक पारंपरिक भारतीय नारी की चारित्रिक विशेषताओं को दिखलाया गया है। लेखक सुनंदा के मनोभावों को दर्शाते हुए उसके अकेलेपन और एकांत जीवन को प्रस्तुत करते हैं। वह भारतीय परंपरा के अनुसार पति की अधीनता स्वीकार करती है एवं खुद को पति की सेविका मानती है। पति कालिंदीचरण का घर देर से आना और उसका स्वयं का ध्यान नहीं रखना सुनंदा को तकलीफ पहुँचाता है। वह स्वयं को पति के साथ मुख्य धारा में जोड़ना चाहती है परंतु पति की ऐसी सोच नहीं है। पुरुषों द्वारा हर युग में स्त्रियों को दोयम दर्जे का समझा जाना पुरुषों की रूढ़िवादी सोच का द्योतक है। इसी प्रकार अमरकांत रचित 'दोपहर का भोजन' कहानी में बेरोजगारी, लाचारी से त्रस्त भारतीय गृहणी सिद्धेश्वरी के जीवन–दर्शन को दिखाया गया है। वह परिवार को बांधे रखने का अथक प्रयास करती है। वह परिवारजनों के बीच सामंजस्य और विश्वास बनाए रखने के लिए एक–दूसरे की झूठी तारीफ भी करती है। ऐसा करने के पीछे उसका यही उद्देश्य है कि बेरोजगारी से उत्पन्न विषादपूर्ण माहौल को खत्म कर सके। वह घर की अन्नपूर्णा भी है और घर के सभी सदस्यों को भोजन कराना अपना कर्तव्य समझती है और इस कर्तव्य का निर्वहन वह आधा पेट भोजन करके करती है। निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि अमरकांत की यह कहानी एक भारतीय नारी के पारंपरिक रूप को दर्शाती है, जो किसी भी परिस्थिति में अपने परिवार को बाँधे रखना चाहती है। वह एक माँ और गृहस्वामिनी होने की कसौटी पर खरी उतरती दिखती है और इस कहानी के पात्रों को स्वयं से बांधे रखती है। उसके संघर्षमय जीवन की द्वन्द्वात्मक स्थिति इस कहानी में नए जोश और उत्साह का संचार करती है।

दलित विमर्श की चर्चा करते हुए ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी 'सलाम' द्वारा समाज की घृणित और निंदनीय मानसिकता को दर्शाया गया है। जाति–व्यवस्था के आधार पर किये जा रहे भेदभावपूर्ण और अमानवीय व्यवहार को पात्र कमल द्वारा दर्शाया गया है जो तथाकथित निम्न वर्ग की बारात में शामिल हो गया है। चायवाला यह बात जानकर उसकी अवहेलना करता है और उसे

अस्पृश्य बताकर उसे चाय पीने के लिए नहीं देता है ––"यो पैसे सहर में जाके दिखाणा। दो पैसे हो गए जेब में तो सारी दुनिया को सिर पे ठाये घूमो.. ये सहर नहीं गाँव है.. यहाँ चूहड़े–चमारों को मेरी दुकान में तो चाय ना मिलती.. कहीं और जाके पियो।'' (वाल्मीकि, ओमप्रकाश–12)।

इस घटना के बाद कमल को बचपन की कुछ घटनाएं याद आती हैं परंतु वह वहाँ कुछ बोल नहीं पाता और इसके बाद वह अपमानित और लज्जित होकर वहाँ से लौट आता है। इसी प्रकार सवर्णों की झूठी शान को नीरा परमार ने 'वैतरणी' कहानी के माध्यम से दर्शाया है। डोम समाज का व्यक्ति मंगतूराम को पूरी बस्ती के लिए चापाकल जैसी बुनियादी वस्तु की अभिलाषा है। दूषित पानी पीने के कारण वहाँ बीमारियों का खतरा हमेशा बना रहता है। ब्राह्मण सवर्ण समाज का प्रतिनिधि है, जो स्वार्थ–सिद्धि हेतु राजनेता काशीराम के विवेक पर पर्दा डाल देता है जिसके कारण मंगतूराम की माँग सिर्फ एक मुद्दा बनकर रह जाती है। इस तरह देखा जाये तो सभी को मोक्ष प्रदान करने वाले डोम समाज की बुनियादी आवश्यकताएं भी पूरी नहीं हो पातीं। इसी तरह वर्ण–व्यवस्था और जाति–व्यवस्था ने मानवीयता को समाप्त करने का फैसला कर लिया है जिसकी स्पष्ट झलक प्रेमचंद रचित 'सद्गति' कहानी में मिलती है। दलित वर्ग के दुखी चमार और पत्नी झुरिया घर–गृहस्थी को संभाले हुए है और उसने अपनी बेटी की शादी भी तय कर दी है। वह पंडित जी को निमंत्रण देने में झिझक रहा है फिर भी हिम्मत जुटाकर और पत्तलों का आसन बनाकर उन्हें निमंत्रण देने खाली पेट ही घर से निकल जाता है। पंडित जी उससे काफी मेहनत करवाते हैं, जिसके कारण उसके पेट में तेज दर्द पैदा होता है और बिना बेटी की शादी किये ही वह मर जाता है। इससे भी उसके जीवन की दुर्गति यह होती है कि उसकी लाश को अग्नि नसीब नहीं होती बल्कि जंगली जानवरों का आहार बन जाती है। दलितों के जीवन की यह दुर्गति निस्संदेह निंदनीय है।

बाल जीवन सभी के जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। बचपन में घटित होने वाली घटनाओं का मानव मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ता है और विशेषकर बच्चों पर। उनकी संवेदनाएं नाजुक बाल मस्तिष्क पर अंकित घटनाओं से संबंधित होती हैं। बच्चे समाज की धरोहर हैं और उनके मनोभावों पर विमर्श करना आवश्यक जान पड़ता है। प्रेमचंद ने 'ईदगाह' कहानी के माध्यम से एक गरीब बच्चे हामिद के मनोभावों को बखूबी दर्शाया है। वह मेले में घूमने जाता है परंतु वहाँ मौजूद लुभावनी वस्तुएं उसे आकर्षित नहीं कर पातीं। मेले में भी उसे दादी के जलते हाथ की याद आती है और भविष्य में उसकी दादी का हाथ न जले, इसलिए वह अपनी दादी के लिए चिमटा खरीदता है– "हामिद लोहे की दुकान पर रुक जाता है। कई चिमटे रखे हुए थे। उसे ख्याल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती है, तो हाथ जल जाता है। अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे, तो वह कितनी प्रसन्न होंगी! फिर उनकी उँगलियाँ कभी नहीं जलेंगी" (राय अमृत, प्रेमचंद–68)।

प्रेमचंद की कहानी का यह पात्र उम्र से पहले ही परिपक्व दिखाई पड़ता है। इसी प्रकार मार्कण्डेय ने 'जूता' कहानी में बालक मनोहर के द्वंद्व, मासूमियत, बालसुलभ जिज्ञासा और मार्मिकता को वर्णित किया है। मनोहर एक घर में नौकर का कार्य करता है। गरीबी के कारण वह कभी जूता नहीं पहन पाया है। यही कारण है कि बहूजी द्वारा जूते दिये जाने पर भी वह उन्हें पहन नहीं पाता और हाथ में जूतों को पकड़ कर कँकड़ीली रास्तों पर खाली पैर ही चलने को विवश है। इस कहानी में एक गरीब बालक के बाल–हृदय और बाल–मस्तिष्क को संवेदनात्मक रूप में लेखक ने वर्णित किया है साथ ही साथ आर्थिक विषमता के कारण उत्पन्न सामाजिक विडंबना और बाल मजदूरी को दर्शाया है। इसी प्रकार मनोवैज्ञानिक लेखक जैनेन्द्र ने 'पाजेब' कहानी की रचना की है। कहानी का मुख्य पात्र आशुतोष है जिसकी उम्र 8 वर्ष है और उसके ऊपर उसकी छोटी बहन मुन्नी के पाजेब चोरी का आरोप लगाया जाता है।आशुतोष के पिता को संदेह है कि उसने पाजेब बेच कर पतंग–डोर खरीदी है। आशुतोष ने चोरी नहीं की है फिर भी वह अपने पिता के तर्क–प्रश्नों में उलझकर सारी बातों में हाँ में हाँ मिलाता है। कहानी के अंत में पता चलता है कि पाजेब गलती से उसकी बुआ के साथ चला गया था। जैनेन्द्र की अन्य कहानियों यथा 'चोर', 'खेल', बिल्ली–बच्चा' आदि कहानियों में भी बाल–मनोविज्ञान की स्पष्ट झलक दिखाई पड़ती है।

हिन्दी कथाकारों का दायरा सिर्फ इन्हीं विमर्शों तक केंद्रित नहीं है अपितु उन्होनें अन्य विषयों यथा रंगभेद, जातिभेद, नस्लभेद, कृषक वर्ग की दयनीय स्थिति, अमीरी–गरीबी आदि संवेदनशील मुद्दों पर भी विचार किया है। प्रेमचंद लिखित 'पूस की रात'कहानी में हल्कू के माध्यम से ग्रामीण जीवन के यथार्थ को दर्शाते हुए कृषक वर्ग की दरिद्रता और मेहनत के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त हुई है। यह वर्ग सभी के लिए भोजन की व्यवस्था करता है परंतु वह स्वयं जमींदारी और ऋण के बोझ तले दबकर दो वक्त की रोटी का जुगाड़ नहीं कर पाता और साथ ही साथ अनिश्चित ब्याज के कारण वह पूरी उम्र ऋणमुक्त नहीं हो पाता। ये कृषक जीवन की सबसे बड़ी विडंबना है कि अन्नदाता ही भूखा रह जाता है और अन्य लोग आराम से बैठकर रोटियाँ तोड़ते हैं। इसी प्रकार नस्लभेद की समस्या और मानवीय संवेदना को कृष्णा सोबती ने 'सिक्का बदल गया' शीर्षक कहानी की पात्रा शाहनी द्वारा दर्शाने का प्रयास किया है। यह कहानी बँटवारे के बाद उत्पन्न हिन्दुओं–मुसलमानों के बदलते रिश्तों को दिखाने में कामयाब रही है। शाहनी जो हिन्दू युवक शेरा की माँ के समान है, उसने शेरा को अपने पुत्र की तरह पाला–पोसा है, वही शेरा जमीन और धार्मिकता की आग में जलकर उसे उसका घर छोड़ने पर विवश कर देता है। शेरा शाहनी की हत्या की साजिश में शामिल हो जाता है

लेकिन मन में उठे शाहनी के प्रति उसका प्रेम उसे रोक लेता है फिर भी शेरा और साजिशकर्ताओं की ऐसी सोच उनकी नस्लभेदी सोच को दर्शाती है। शाहनी शेरा की माँ जैसी थी परंतु उसका मुसलमान होना ही उसके घर छोड़ने का कारण बना और वह बँटवारे जैसी संवेदनशील घटना की बलि चढ़ गयी। इस कहानी के माध्यम से कृष्णा सोबती ने तत्कालीन परिस्थिति को दर्शाया है कि लोग धार्मिकता और सांप्रदायिकता की आग में जलकर अपनी संवेदना खोते जा रहे हैं और उनके बीच की एकता खत्म होती जा रही है। बँटवारे के कारण उत्पन्न परिस्थिति को मोहन राकेश ने 'मलबे का मालिक' कहानी द्वारा दर्शाया है। इसके अतिरिक्त इस शोध–पत्र में नौकरों की संवेदना को अमरकांत रचित 'बहादुर' कहानी के माध्यम से दर्शाया गया है। सामान्यतः हमारे समाज में ऐसा देखा जाता है कि घर में नौकर रहने पर लोग उनके साथ कठोर व्यवहार करते हैं और कभी कभी निंदनीय व्यवहार करते हैं। नौकर भी आम लोग की तरह मनुष्य ही होते हैं फिर भी लोग उनकी उपेक्षा और भर्त्सना किया करते हैं। अमरकांत का नायक बहादुर भी ऐसी मानसिकता का शिकार होता दिखाई पड़ता है। वह 12–13 साल का लड़का है जो लेखक के परिवार में नौकर बन के आता है। कुछ समय पश्चात् लेखक के परिवारजनों द्वारा उसपर चोरी का झूठा आरोप लगाया जाता है जिससे आहत होकर वह बिना किसी को बताये घर छोड़ कर चला जाता है। इसके बाद परिवारजनों को उसकी उपयोगिता समझ में आती है और वे पश्चाताप की अग्नि में जलने लगते हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हिन्दी कथाकारों ने अलग–अलग विषयों को ढूँढ कर अपनी संवेदनाएं व्यक्त की हैं।

सिर्फ हिन्दी साहित्य ही नहीं अन्य साहित्यों में भी कथाकारों की मानवीय संवेदना दिखाई पड़ती है। सातकोड़ी होता एक उड़िया साहित्यकार हैं और इनकी रचना 'ढहते विश्वास' है जिसका हिन्दी में अनुवाद राजेन्द्र प्रसाद मिश्र ने किया है। कहानी लक्ष्मी नामक महिला के इर्द–गिर्द घूमती हैं जो वहाँ की मूल समस्या बाढ़ का सामना अकेले करती दिखाई पड़ती है साथ ही साथ पति के घर से दूर रहने के कारण अकेले ही बच्चों का पालन–पोषण करती है। बाढ़ आने के कारण तटबंध टूट जाता है और कुछ ही समय में पूरा गाँव डूब जाता है। इस विपत्ति में उसके बच्चे भी डूब कर मर जाते हैं। उसे ईश्वर पर विश्वास होता है कि उनके पास हर समस्या का हल है परंतु परिवार के नष्ट होने पर उसका यह विश्वास खत्म हो जाता है। कहानी के अंत में दिखाया जाता है कि लक्ष्मी किसी अन्य की मरी हुई संतान को सीने से लगाकर रोती है और अपनी संवेदनाएं प्रकट करती हैं। इसी प्रकार 'माँ' कहानी ईश्वर पेटलीकर रचित है जिसका हिन्दी में अनुवाद गोपालदास नागर ने किया है। इस कहानी में लेखक ने मानवीय संवेदना को एक माँ के द्वारा प्रस्तुत किया है। मंगु जो जन्म से गूँगी, बधिर एवं पागल लड़की है, जिसकी माँ बचपन से लेकर अब तक उसका ध्यान रख रही है। माँ के लिए मंगु की खुशी ही सर्वोपरि है। भरा–पूरा परिवार होते हुए भी माँ की ममता पूर्णतः मंगु को ही समर्पित है। मंगु के पागलपन के कारण परिवार वाले उसे पागलखाना में भर्ती करवाना चाहते हैं परंतु माँ नहीं चाहती कि मंगु उनसे दूर जाये। गाँव की ही पागल लड़की कुसुम के पागलखाना से ठीक होकर वापस आने के बाद मंगु को पागलखाना भेजने पर विवश कर दिया जाता है। कहानी के अंत में मंगु के पागलखाना जाने के बाद माँ भी पागलों की श्रेणी में आ जाती है। इसी तरह रवीन्द्रनाथ टैगोरे रचित 'काबुलीवाला' कहानी बांग्ला भाषा में लिखी गई है जिसका हिन्दी अनुवाद किया गया है। इस कहानी में एक पिता की संवेदना को काबुलीवाला द्वारा दर्शाया गया है जिसकी विदेश में एक पुत्री थी और उसका चेहरा उसने वर्षों से नहीं देखा था। यही कारण है कि वह पात्रा मिनी को बेटी के समान प्रेम करता था। उसका और मिनी का रिश्ता सम्मान, स्नेह और मित्रता की भावना से परिपूर्ण था। यह प्रेम इस बात का प्रमाण है कि एक पिता का प्रेम सरहदें नहीं देखता और जिस मनुष्य के भीतर मानवीय संवेदना रहेगी, वह मानव–कल्याण ही करेगा।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत शोध कार्य के अंतर्गत हमने हिन्दी कथाकारों की कहानियों में मानवीय संवेदना को लिया है,जो पाठकों को जागृत करने में सक्षम रहे हैं। कथासम्राट प्रेमचंद हों या मनोवैज्ञानिक रचनाकार जैनेन्द्र या अन्य कथाकार, सभी ने अपनी कहानियों के माध्यम से मानवीय संवेदना को जीवंत बनाया है।

मनीषा कुलश्रेष्ठ अपनी कहानी 'कठपुतलियाँ' में स्त्रियों की दयनीय तथा मार्मिक दशा का चित्र प्रस्तुत करती हैं वहीं दूसरी तरफ कहानी 'पत्नी' में जैनेन्द्र एक स्त्री के मनोभावों को दर्शाते हैं जिसमें उसकी मानसिक दशा को उन्होनें महत्व दिया है। 'दोपहर का भोजन' कहानी द्वारा अमरकांत ने एक ऐसी निम्न–मध्यमवर्गीय महिला का वर्णन किया है जो अपनी बुद्धि और त्याग के बल पर परिवार को जोड़े रखने का प्रयास कर रही है। स्त्री विमर्श की इन कहानियों में उनकी भावनाओं, मनोदशा तथा चेतना का प्रसार दिखाई पड़ता है, जो अपनी कारुणिक स्थिति से ऊपर उठकर हौसले से अग्रसर होती दिखाई पड़ती हैं। इसी प्रकार दलित विमर्श हो या वृद्ध विमर्श, सभी अपनी संवेदना, पहचान तथा अस्तित्व को बनाये रखने के लिए संघर्ष करते दिखाई पड़ते हैं।

बाल–मनोविज्ञान पर आधारित कहानियों द्वारा लेखकों ने बच्चों की मनोदशा को प्रस्तुत किया है। समग्रता से देखा जाये तो जिस प्रकार से हमारे हिन्दी कथाकारों ने मानवीय संवेदना को अपनी कहानियों के माध्यम से एक आवाज दी है, उसी प्रकार हिन्दी से इतर कथाकारों ने भी अपनी कहानियों द्वारा मानवीय संवेदना को एक

पहचान देते हुए उसे पाठकों के हृदय में जागृत करने का प्रयास किया है।

इसके अलावा कथाकारों ने बँटवारे की विभीषिका, मध्यमवर्गीय परिवार के नौकर और कृषक वर्ग की यथार्थवादी स्थिति को भी वर्णित किया है। कृषक वर्ग पूरी उम्र ऋणमुक्त नहीं हो पाता जबकि धर्मांधता में चूर कट्टरपंथियों द्वारा फैलाया गया वैमनस्य एवं कुछ मध्यमवर्गीय परिवार की घृणित सोच उन्हें बदतर जीवन जीने को बाध्य करती है।'सिक्का बदल गया','पूस की रात' और 'बहादुर' कहानी द्वारा इन्हीं संवेदनाओं को दर्शाने का प्रयास किया गया है। हिन्दी से इतर साहित्यकारों ने भी 'माँ', 'ढहते विश्वास' और 'काबुलीवाला' जैसी कहानियों द्वारा मानवीय संवेदनाओं को उजागर किया है।

हिन्दी साहित्य अपने–आप में विभिन्न मानवीय संवेदनाओं को समेटे हुए है। हमने अपने शोध–कार्य के माध्यम से कुछ ही कहानियों को लिया था, जिसमें लेखकों की संवेदनशील चेतना दिखाई पड़ती है। इन रचनाओं के अलावा अन्य रचनाओं में भी मानवीय संवेदना का स्पष्ट पुट देखने को मिलता है। हमारी कोशिश रहेगी कि हम भविष्य में उन कहानियों पर भी शोध करें और मानव–जीवन के उद्धार का मार्ग प्रशस्त करें।

संदर्भ स्रोतः

'मीनू' डॉ रजत रानी (2006). अस्मितामूलक विमर्श और हिन्दी साहित्य, वाणी प्रकाशन।

यादव, डॉ उषा, (1999). हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, अंसारी मार्ग, नई दिल्ली।

वाल्मीकि, ओमप्रकाश, (2000). सलाम (कहानी संग्रह), राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड ।

राय अमृत, प्रेमचंद की श्रेष्ठ कहानियाँ (कहानी संग्रह), हंस प्रकाशन (इलाहाबाद)।